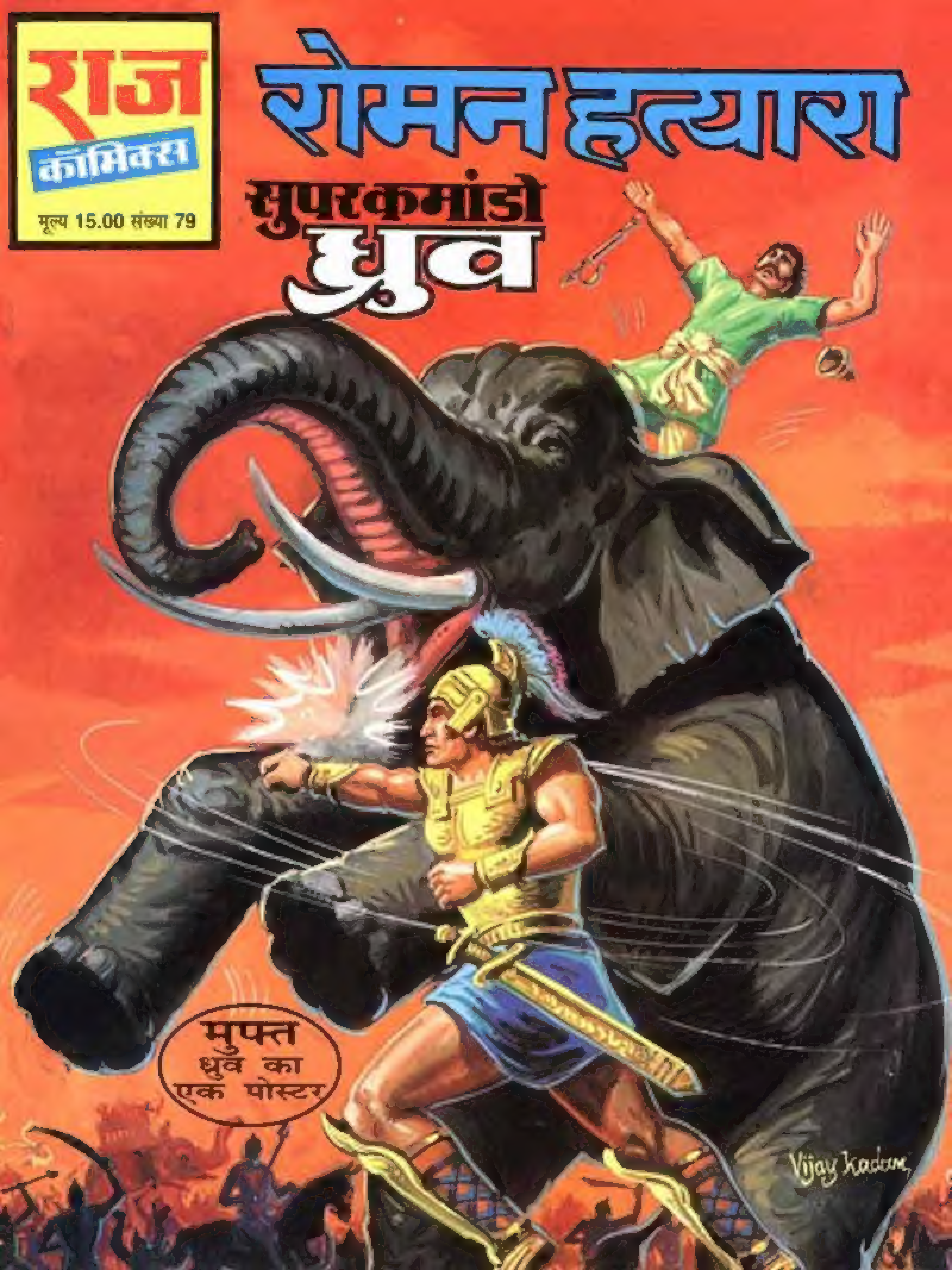

राज
कॉमिक्स
मूल्य 15.00 संख्या 79
रोमन हत्यारा
सुपर कमांडो
ध्रुव
मुफ्त
ध्रुव का
एक पोस्टर
Vijay Kadam

सुपर कमाँडो

ध्रुव

रोमन हत्यारा

कथा व चित्रांकन : अनुपम सिन्हा • सम्पादक : मनीष चन्द्र गुप्त

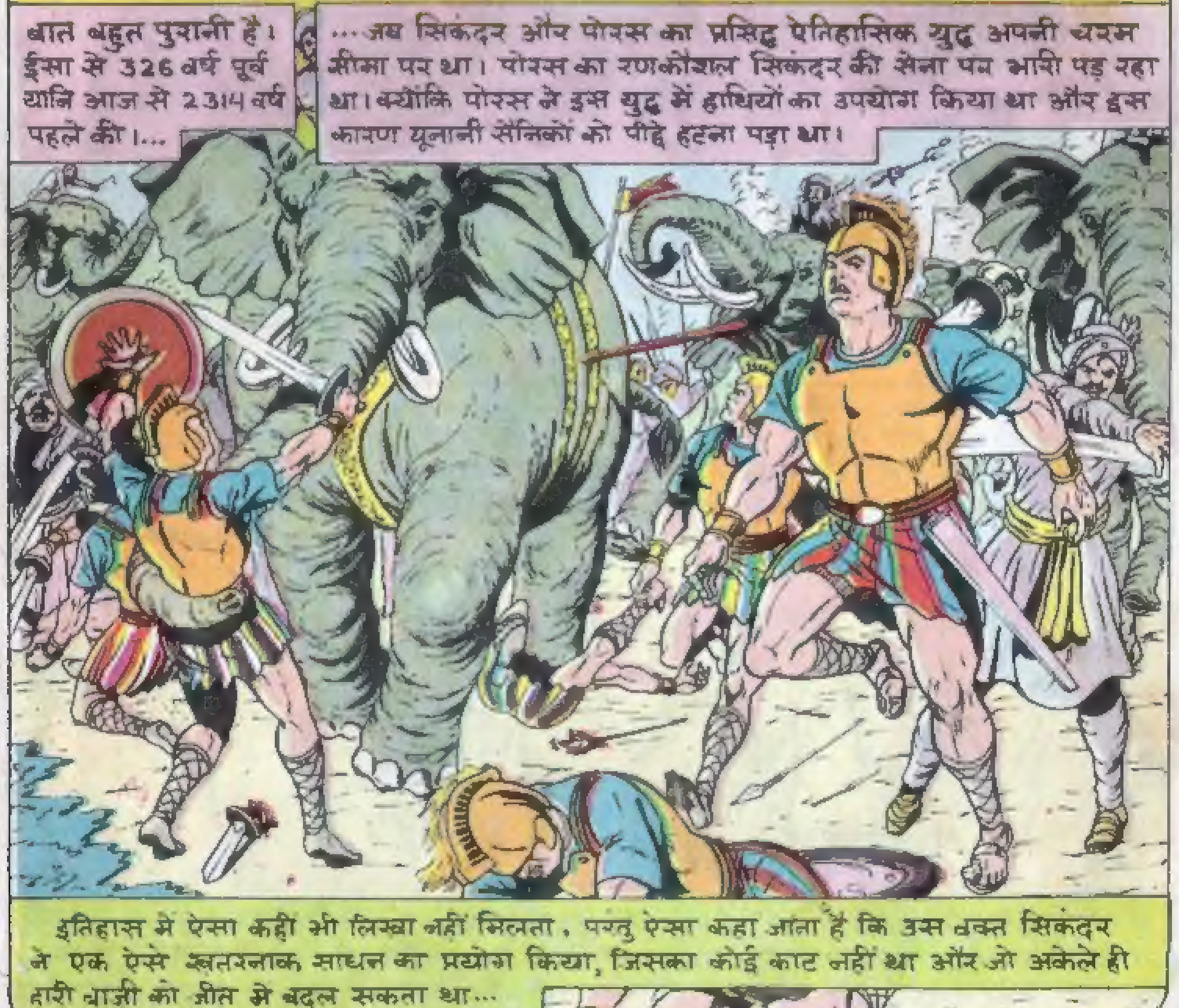

...और यह खतरनाक साधन था एक रहस्यमय रोमन सैनिक, जिसमें असीम शक्ति थी! गज़ब की ताकत!
इतिहास गवाह है कि पोरस की हार उसके हाथियों के भड़कने के कारण हुई।
और कहते हैं कि उसकी ताकत का स्रोत था उसका टोप, जो किसी सूफी ने उसको उपहार-स्वरूप दिया था!
और उन हाथियों के भड़कने का कारण था वह रहस्यमय सैनिक - और उसका रहस्यमय टोप...
... और जहाँ तक मेरा ख्याल है, यही वह टोप है! समझे?
वाह! यह तो हमारे म्यूज़ियम की सबसे नायाब चीज़ होगी!
इसको तो म्यूज़ियम में ही पहुँचाऊंगा!
मेरे अलावा और कोई इसको म्यूज़ियम तक नहीं ले आ पाएगा!
इनको हवा भी नहीं लगेगी कि यह टोप कब और कैसे म्यू-ज़ियम पहुँच गया!
जी हां! सिंधु घाटी के खंडहरों में खड़े यह चारों व्यक्ति कुंदनपुर म्यूज़ियम के डिप्टी-डायरेक्टर हैं। बाएं से, तिवारी जी, श्रीवास्तव बाबू, खान साहब और मि० डिसूज़ा। और चारों यह जानते हैं कि जो भी यह टोप म्यूज़ियम तक पहुँचाएगा, मेयर साहब अगला म्यूज़ियम-डायरेक्टर उसी को बनाएंगे!

और इस प्रकार वह कहानी प्रारंभ हुई जिसने पूरे कुंदनपुर को हिला कर रख दिया। शुरुआत तिवारी जी ने करी।
जहाँ तक मेरा ख्याल है, इस रोमन टोप की सुरक्षा जरूरी है!
वरना इसके साथ ही मेरा डायरेक्टर बनने का चान्स भी उड़न-छू हो जाएगा!
वैसे भी मुझको बाकी तीनों की नीयत पर शक है!
लेकिन अब कोई फिक्र नहीं!
अब यह फंदा मेरे रोमन-टोप की रखवाली करेगा!
आऽऽऽ ओ! अब मैं चैन की नींद सो सकूंगा!
इधर तिवारी जी की पलकें मुंदीं—
—और उधर श्रीवास्तव बाबू ने तिवारी जी के टैंट में प्रवेश किया।
वाह! इतनी आसानी से काम हो गया!
हा-हा-हा! अब यह रोमन टोप मेरा है!
इससे पहले कि कोई जगे...
...मैं रातों-रात रफूचक्कर... आह!!
पर खान साहब भी घात लगाए बैठे थे।
तड़

और अब रोमन टोप खान साहब के हाथ में था–
रफूचक्कर होगा !? अरे अब अपनी खोपड़ी को रफू कराता फिरेगा श्रीवास्तव! हा–हा..हा...
हा– हाऽऽऽ!! यह क्या ?
बड़ी जल्दी में थे, खान साहब ! कहीं आ रहे थे क्या ?
क.. कहीं नहीं, डिसूजा भईया ! अरे, मुझे जल्दी से बाहर निकालो !
कहीं किसी सांप-वांप ने काट लिया तो मेरी यहीं पर कब्र बन जाएगी !
अरे, मेरे तुम्हारे दुश्मन !
ऐसा करो, तुम यह टोप ऊपर फेंको ! बदले में मैं एक रस्सी नीचे फेंक दूंगा ! बस !
तो ये ले कम्बख्त ! पकड़ !
हा...हा ! धन्यवाद, खान साहब !
अब तो कुंदनपुर में ही मुलाकात होगी ! बाय-बाय !
अरे, धोखेबाज़, रस्सी तो फेंकता जा ! ...
हा ही हा ! रस्सी होती तो...

...मैं... मैं मैं !!?
अंधेरे में डिसूज़ा को ज़मीन पर पड़ा वह फंदा बिल्कुल नहीं दिखा –
जो तिवारी जी ने वहां पर खास तौर से बनाकर रखा था।
बचाओ! बचाओ!!
इस चीख-पुकार से तिवारी जी की नींद खुली।
अरे! यह कौन चिल्ला रहा है?
बचाओ बचाओ
और मेरा रोमन-टोप कहां गया?
तिवारी जी तेजी से आवाज़ की तरफ़ भागे।
ओह! तो तुम हो डिसूज़ा? धोखेबाज़, चोर!!
अरे बातें बाद में करना...
पहले मुझे नीचे तो उतारो!
नहीं! तुम्हारे जैसे विश्वासघाती की यही सज़ा है कि तुम ऐसे ही उलटे लटके रहो!
इतने क्रूर मत बनो, दोस्त!
गुड बाय, डिसूज़ा...
...अब कुंदन पुर में ही मिलेंगे! अब तुम अखबार में पढ़ोगे कि...
नगर मेयर द्वारा श्री एम॰ तिवारी म्यूजियम डायरेक्टर नियुक्त

अगले दिन - आई॰ जी॰ राजन के बंगले के लॉन में -
पीटर मैसी ! 1982 का राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार! पांच सशस्त्र डकैतों को अकेले ही सिर्फ़ ईंटें फेंक-फेंक कर मार भगाया !
रेणु ! 1983 की राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार विजेता ! बाढ़ से दस व्यक्तियों की जान बचाई ! राष्ट्रीय जूनियर निशानेबाज़ी चैंपियन !
करीम शाह ! 1981 का राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार! नशीले पदार्थों के सात तस्करों को गिरफ़्तार कराया !
और... अरे ! यह चौथा कौन आ गया ?
इसमें तो सिर्फ तीन...
श्वेता मेहरा ! 1984 में चार मक्खियों को अकेले ही मार डाला। और...
ठहर तो, बंदरिया ! अभी बताता हूं !
मम्मी ! बचाओ !!
हा हा हा ! डरपोक कहीं की !
हां, कमांडो पीटर, रेणु और करीम ! तुम तीनों की ट्रेनिंग कल से शुरू होगी ! अब तुम तीनों गेस्ट-हाऊस जाकर आराम करो !
थैंक्यू कैप्टेन !

आओ, बेटे! कहो, कैसी है तुम्हारी कमांडो फ़ोर्स?
मेरी नहीं, आप की, पापा! इन सबकी इजाज़त आप ने ही तो दिलवाई है!
वैसे, 'कमांडो फोर्स' अभी छोटी होने के बावजूद, बिल्कुल मेरे मन लायक है!
तीनों कैडेट ईमानदार, साहसी और अपराध के कट्टर विरोधी हैं!
इनकी छः महीनों की ट्रेनिंग के बाद मैं इनको देश के अलग-अलग शहरों में भेजूंगा, जहाँ ये 'राष्ट्रीय कमांडो फोर्स' की शाखाओं की स्थापना करेंगे! ...
... और पुलिस को अपराध खत्म करने में पूरा सहयोग देंगे!
यही सब सोचकर तो मैंने तुमको इस सब की इजाज़त दिलवाई है!
मुझे पूरी उम्मीद है कि तुम्हारी कमांडो फोर्स मेरी उम्मीदों पर खरी उतरेगी!
यह मेरा वादा है, पापा! मैं आपके विश्वास को कभी ठेस नहीं लगने दूंगा!
उसी वक्त - कुंदनपुर के तीन अलग-अलग हिस्सों में - नफ़रत का सागर उफ़ान भर रहा था।
हुंह! म्यूज़ियम डायरेक्टर तिवारी!?
और यह सब खान और डिसूज़ा के कारण हुआ है!
तिवारी कमीने, देख लूंगा तुझे और बाकी दोनों को भी!
खान साहब ने भी कच्ची गोलियां नहीं खेलीं!
अगर श्रीवास्तव और खान टांग न अड़ाते तो तिवारी कभी डायरेक्टर न बन पाता!
मैं किसी को नहीं छोड़ूंगा!

और उसी रात- जब घड़ी की सुईयाँ एक बजने का इशारा कर रही थीं, कुंदनपुर म्यूजियम में एक छाया व्यस्त थी।
ये रही एक रोमन पोशाक! इससे इफेक्ट और ज़ोरदार आएगा!
...और ये रहा मेरा प्यारा रोमन टोप! ही ही!
दो हाथ टोप उठाने के लिए बढ़े-
परंतु रोमन टोप छूते ही एक अलार्म बज उठा।
यह क्या!?
पलक झपकते ही सतर्क म्यूजियम गार्ड कमरे की तरफ भागे।
कमरा अंदर से बंद है!
दरवाज़ा तोड़ दो!
परंतु कमरे में घुसते ही वे एक क्षण के लिए हक्के-बक्के रह गए।
एक आश्चर्यजनक दृश्य उन की आंखों के सामने था।
रोमन सैनिक बने उस व्यक्ति ने इसका पूरा फ़ायदा उठाया।

आह! इतनी ताक़त! यकीन नहीं होता!
रोमन सैनिक ने म्यूज़ियम में तबाही मचा दी।
म्यूज़ियम का मज़बूत मुख्य द्वार भी रोमन सैनिक की ताक़त के आगे बेबस था।
तड़ाक
वह सड़क पर आकर एक क्षण को रुका।
सामने से एक कार आ रही थी।
य...यह क्या है?
यह तो मुझे रुकने का इशारा कर रहा है!...
...पर रुकूंगा तो ये मुझको मार डालेगा!
ड्राइवर का पैर एक्सीलेटर पर दबने लगा।
स्पीडोमीटर की सुई उछलकर नब्बे पर थिरकने लगी।
लेकिन फिर भी-कार एक झटके से रुक गई।
धपप
अगले ही पल कार का ड्राइवर उछलकर बाहर आ गिरा।

कार एक झटके से आगे बढ़ी और अंधेरे में गुम हो गई।
थोड़ी ही देर बाद पूरी सड़क पुलिस की गाड़ियों से भरी थी।
सुबह -
... और म्यूजियम के डायरेक्टर श्री तिवारी का दावा है कि उस रोमन टोप को पहनने वाले में आश्चर्यजनक ताकत आ जाती है!
हुह! ये अंधविश्वासी लो ..
अरे जाओ! अगर उससे भिड़ंत हो गई तो देखूंगी कि कौन बचाने आता है!
तुम लटकती हुई आ जाना, बंदरिया!
मम्मी! भईया ने मुझे फिर बंदरिया कहा!
ठीक कहा!
दिन डूबा, शाम ढली और रात गहराने लगी।
शहर की सबसे ऊंची इमारत 'चैपेल' की...
पच्चीसवीं मंजिल से चारों तरफ अंधेरे का ही साम्राज्य नजर आ रहा था।
हा हा! मुझे तो हंसी आ रही है! देश के सबसे बड़े म्यूजियम के डायरेक्टर तिवारी जी पत्ते की तरह थर-थर कांप रहे हैं!
तुम नहीं जानते जैकब! उस टोप को पहनने से असीमित ताकत आ जाती है!...

...और फिर उस रोमन सैनिक के लिए कोई काम असम्भव नहीं रहता!
शहर की सबसे ऊंची इमारत से अब हम आप को शहर के बाहर के सैनिक छावनी क्षेत्र में ले चलते हैं। जहां एक हवाई-पट्टी पर खड़े कुछ लड़ाकू विमानों पर एक सैनिक पहरा दे रहा है।
सब कुछ एकदम सामान्य और शांत है।
परंतु एकदम से दृश्य बदल जाता है।
एक भयावह आकृति ने अंधेरे से प्रगट होकर पहरेदार को दबोच लिया है।
मम्म
दो मिनट की छटपटाहट के बाद पहरेदार का शरीर ठंडा और शांत पड़ गया।...
...और रोमन सैनिक किनारे खड़े एक लड़ाकू विमान की ओर बढ़ चला।
अरे! इस वक्त कौन पायलट प्लेन उड़ा रहा है?
हैलो! हैलो 4501 NT! अपनी पहचान दो!
वरना हम तुम्हें मार गिराएंगे!
परंतु उधर से कोई जवाब नहीं आया।
शीघ्र ही दो अन्य लड़ाकू विमान उस चोरी किए गए विमान के पीछे उड़ चले।

और उधर-'चेपेल' की छत पर-
समझने की कोशिश करो, जैकब! मुझे पूरा यकीन है कि वह टोप मुझे ही मारने के लिए चुराया गया है!...
...और यह काम या तो श्रीवास्तव का है या स्वान का और या फिर... डिसूज़ा का!
फिर भी तुम चिंता मत करो, तिवारी!...
...मैं अपने सबसे प्यारे दोस्त को कभी मरने नहीं दूंगा! यह इमारत मेरी है; यह इलाका मेरा है! चप्पे-चप्पे पर मेरे आदमी बंदूके लिए तैनात हैं...
...अब तुम्हारा 'रोमन हत्यारा' तुम तक या तो मर कर पहुंच सकता है...
... या उड़ कर!?
यह लड़ाकू हवाई-जहाज इतनी रात गए यहां क्या कर रहा है?
गोली चलाओ इस पर!
गोलियों की बौछार शुरू हो गई।
लेकिन हवाई-जहाज पर खरोंच तक नहीं आई।
जवाब में लड़ाकू यान पलटा।
उसकी तोपों का मुंह इमारत की तरफ मुड़ा...
...और इमारत की छत के परखच्चे उड़ गए।
तिवारी जी लिफ्ट की तरफ भागे।

तोपें एक बार फिर गरजीं ..
...और तिवारी के चिथड़े चारों तरफ़ बिखर गए।
पीछा करने वाले लड़ाकू यान अब दूर नहीं थे।
तुम ने देखा, राकेश?
हां, अब और कोई चारा नहीं है!
हमको इस विमान को नष्ट करना ही पड़ेगा!
इसे समुद्र की तरफ खदेड़ो!
वह खुद ही समुद्र की तरफ जा रहा है!
चलो! इसने हमारा काम खुद ही आसान कर दिया! वरना इसके जलते हुए टुकड़े शहर में गिरते!
धम
कड़ड़ड़ड़ड़
दोनों लड़ाकू विमानों की तोप लगभग एकसाथ गरजीं -
निशाना सच्चा था।
जलता हुआ विमान नदी के पानी की तरफ गिरने लगा।
लेकिन रात के अंधेरे में किसी ने भी 'रोमन सैनिक' को सकुशल बाहर निकलते नहीं देखा।

विमान के टुकड़े धीरे-धीरे समुद्र तल की तरफ बढ़ने लगे।
और एक रहस्यमय आकृति समुद्र की सतह की तरफ।
पीछा कर रहे दोनों विमानों ने एक चक्कर काटा और फिर वे भी तेज़ी से अंधेरे में गुम हो गए।
हा, हा! एक गया, दो बाकी!
अगले दिन-
मैं अब भी कहता हूं आई॰जी॰ साहब कि वह 'रोमन-हत्यारा' मरा नहीं! वह ऐसे मामूली हादसे में मर ही नहीं सकता!
मामूली!? आप ऐसे एक्सीडेंट को मामूली कह रहे हैं?
ख़ैर, मि॰डिसूज़ा! मैं कोई ठोस ख़बर मिलने तक आपको एक अंगरक्षक दे सकता हूं!...
...आप यही चाहते हैं न?
जी हां, आई॰जी॰ साहब! मैं जानता था कि आप मेरी जान ख़तरे में नहीं पड़ने देंगे! वैसे... मेरा अंगरक्षक होगा कौन?
उसका नाम है...
सुपर कमांडो ध्रुव!
और थोड़ी देर बाद जब डिसूज़ा पुलिस-हैडक्वार्टर से बाहर निकला तो उसके चेहरे पर निश्चिंतता तैर रही थी।
आधे घंटे बाद उसकी कार शहर के बाहर बीहड़ों के बीच बने एक केबिन की तरफ बढ़ रही थी।
जब तक यह ख़तरा टल न जाए, तब तक यह केबिन मेरा नया घर होगा!

यहां पर मुझको कोई नहीं ढूंढ पाएगा! वाह! हा हा!!
डिसूज़ा तेजी से कार से उतरा।
और उसने केबिन का दरवाजा खोला।
आइए, डिसूज़ा साहब!
क...कौन हो तुम? अंदर कैसे आए?
मेरा नाम ध्रुव है, मि० डिसूज़ा! सुपर कमांडो ध्रुव!..
..आई० जी० साहब ने मुझको आपकी सुरक्षा के लिए नियुक्त किया है!
तुम को?.. हा हा हा! तुम मेरी रक्षा करोगे!? अरे, तुम्हारे जैसे बच्चे की रक्षा तो उलटे मुझ को करनी पड़ेगी!
मैं आपकी शंकाओं का कारण समझ रहा हूं, मि० डिसूज़ा!...
..लेकिन आप निश्चिंत रहिए!
वक्त आने पर मैं आपको धोखा नहीं दूंगा!
हुंह! छोटा मुंह और बड़ी बात! खैर, मैंने ऐसे ही वक्त के लिए यह 'रिवा-ल्वर' संभाल कर रखा था!
बहुत खूब! पर इसकी जरूरत आपको नहीं पड़ेगी!
...मेरे रहते!
..लेकिन एक बात तो बताइए! आपके अलावा श्रीवास्तव बाबू और खान साहब पुलिस के पास क्यों नहीं आए?
क्योंकि या तो वे बहुत चालाक हैं या फिर बहुत बेवकूफ!...
और उन दोनों में से एक तो खुद ही 'रोमन हत्यारा' है।
उसको क्या फिक्र?

अंदर बैठे ध्रुव और डिसूज़ा केबिन की तरफ बढ़ रही तेज़ पगचापों से अंजान थे।...
और जबतक उनको खतरे का आभास होता, खतरा सिर पर आ पहुंचा था।
?
ओह! आ..आ गया! अब मैं नहीं बचूंगा! नहीं...
क्लाक
लेकिन इससे पहले कि कोई अनहोनी घटती, ध्रुव लपक कर दोनों के बीच में आ गया।
'रोमन-सैनिक' का हाथ बिजली की सी तेजी से घूमा-
और ध्रुव उछलकर दूर जा गिरा।
एक लम्बे डग ने रोमन सैनिक को डिसूज़ा के पास पहुंचा दिया।
भय से कांप रहे डिसूज़ा को उसने गर्दन से पकड़कर उठा लिया।
डिसूज़ा का दम घुटने लगा। लेकिन साथ ही साथ उसका रिवॉल्वर वाला हाथ ऊपर उठा।

परंतु इससे पहले कि रिवॉल्वर चल पाता, ध्रुव एक बार फिर रोमन-सैनिक पर टूट पड़ा।
लेकिन-
आह! यह तो मुझे ऐसे मार रहा है, मानो मक्खी उड़ा रहा हो!...
य... यह लड़का मुझे नहीं बचा पाएगा
डिसूजा का रिवॉल्वर दोबारा उठा-
नहीं! गोली मत चलाना!
भय से कांप रहे डिसूजा ने कुछ नहीं सुना।
उसका रिवॉल्वर एक के बाद एक गोलियां उगलने लगा।
पूरा केबिन धुएं से भर गया।
पर जब धुआं छंटा तो -
य... यह क्या!? इसपर तो गोलियों का भी कोई असर नहीं।
डिसूजा बाहर की तरफ भागा।
रोमन-सैनिक भी उसके पीछे लपका-
लेकिन ध्रुव के कारण उसको फिर रुक जाना पड़ा।

इस बार उसने ध्रुव पर अपने शिकार के भागने का गुस्सा उतारना शुरू कर दिया।
ध्रुव को वार करने का कोई मौका नही मिला।
वह किसी प्रकार ताकत बटोर कर उठ खड़ा हुआ।
लेकिन तभी एक चमचमाती दुधारी तलवार उसकी गर्दन पर आ लगी
और अंदर घुसने लगी।
ध्रुव के गले से खून की एक पतली धार नीचे की तरफ़ रेंगने लगी।
आह! अगर इस वक्त कुछ न किया...
ध्रुव ने पूरा ज़ोर लगाया-
और लकड़ी में गड़ा कीला बाहर आ गया।
मट
अगले ही पल ध्रुव का हाथ तेजी से घूमा और –
आह!
इस समय भागने में ही समझदारी है!
?

पीछे देखकर भाग रहे ध्रुव का पैर पेड़ की एक उभरी जड़ में फंसा -
वह झटके से नीचे गिरा
और उसकी आंखों के आगे धीरे-धीरे अंधेरा छाने लगा।
कड़ाक्
पास आती पदचापों को ध्रुव सुन नहीं पाया।
क्योंकि वह बेहोश हो चुका था।
हा हा हा !!
'रोमन-सैनिक' पलटा और अपने असली शिकार की खोज में बढ़ चला।
पता नहीं कितनी देर बाद - ध्रुव को धीरे-धीरे होश आना शुरू हुआ।
अरे! डिसूजा जी कहां गए?
कहीं वे उस 'रोमन-हत्यारे' के चंगुल में... नहीं, नहीं! ऐसा नहीं हो सकता!
वह तेजी से कॉटेज की तरफ भागा।

कॉटेज तो खाली है!
लेकिन यह ज़मीन पर क्या पड़ा है?
यह तो उस गोली का खोल है, जो डिसूज़ा ने 'रोमन-सैनिक' पर चलाई थी! लेकिन यह तो ···
ओह!
अब कुछ-कुछ समझ में आ रहा है।
वह तेज़ी से बाहर निकला।
और अपनी स्पेशल मोटर-साईकल पर शहर की तरफ रवाना हो गया।
और फिर शहर के एक फ्लेट में।
हेलो! ब्लू बेग?
मैं 'रेड-रोज़' बोल रहा हूं! ··· गड़बड़ हो गई! डिसूज़ा बचकर भाग निकला, बॉस!
क्या!?
खैर, जो होना था हो गया! लेकिन अगर तुमने अपनी ज़ुबान खोली तो हमेशा के लिए खामोश कर दिए जाओगे!
क कभी नहीं!
वाह! क्या प्यार भरी बातें हो रही थीं!
तु··· तुम!!
तुम यहां कैसे? क··· क्या चाहते हो तुम मुझसे?

उस केबिन में सिर्फ तीन लोगों की उंगलियों के निशान थे! डिसूजा, मेरे और 'रोमन-सैनिक के!...
...पुलिस रिकॉर्ड से यह पता करना कतई मुश्किल नहीं था कि वे तीसरी उंगलियों के निशान किसके हैं!
वे निशान तुम्हारे थे! तुम्हारे; यानि अपने ज़माने के मशहूर दादा रंगा-शाह के!
त...तो अब तुम मुझसे क्या चाहते हो?
तुम्हारे बॉस का नाम और 'रोमन-टोप' का पता!
मुझे नहीं पता कि वह कौन है! खुदा कसम!
झूठ!
मत मारो। मैं सच कह रहा हूं कि मुझे नहीं मालूम!...
...बात परसों की है! मैं इसी कमरे में बैठा सोच में डूबा था कि मेरी बेटी के निकाह के लिए पैसे कहां से आएंगे!...
...कि तभी - न जाने कहां से एक अजीब आकृति मेरे सामने आकर खड़ी हो गई
क...कौन हो तुम? क्या चाहते हो?
लेकिन उसने बिना कुछ बोले मुझे मारना शुरू कर दिया।
उसका एक-एक हाथ सौ-सौ किलो के हथौड़े की तरह पड़ रहा था।
धड़

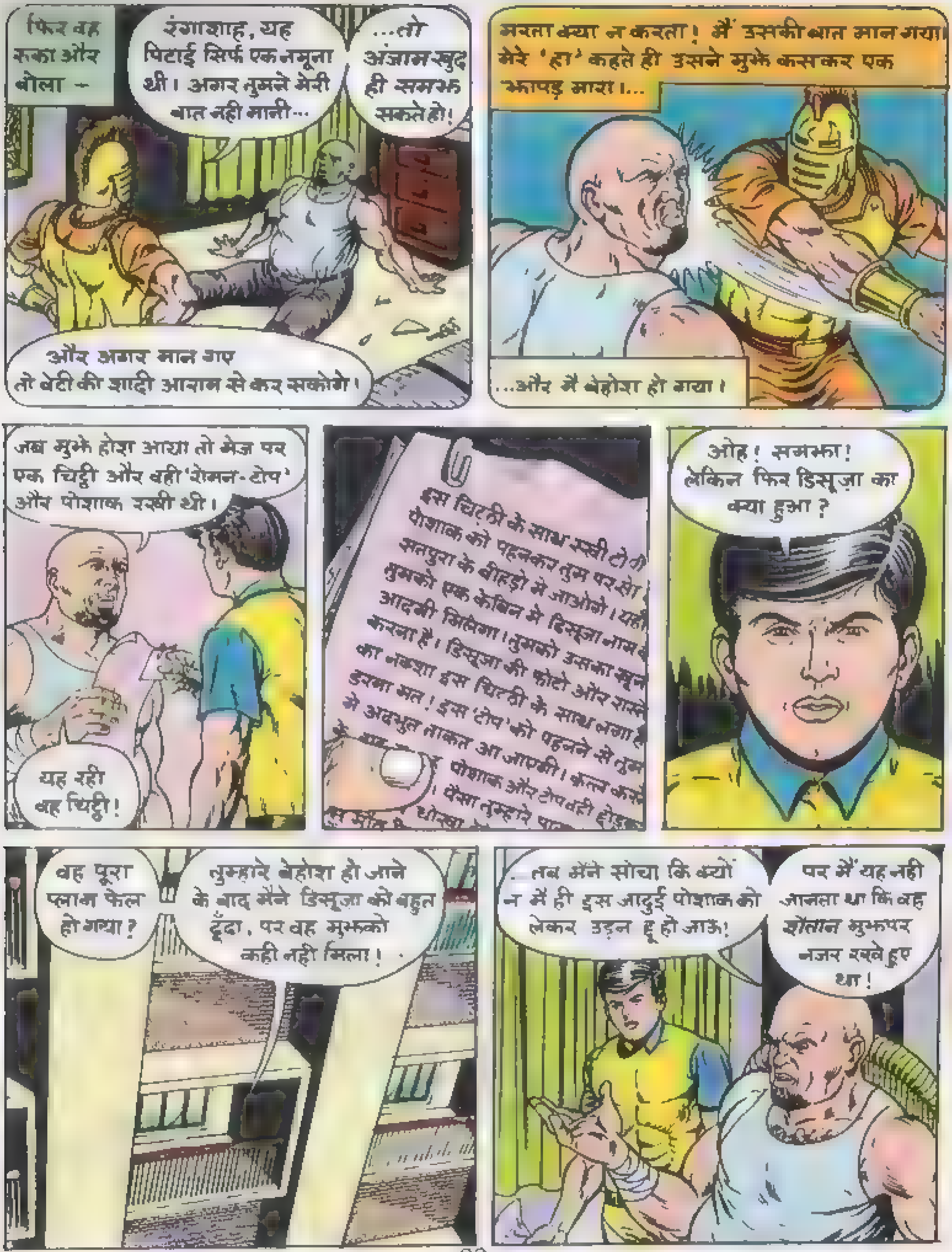
फिर वह रुका और बोला –
रंगाशाह, यह पिटाई सिर्फ एक नमूना थी। अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी...
...तो अंजाम खुद ही समझ सकते हो!
और अगर मान गए तो बेटी की शादी आराम से कर सकोगे।
करता क्या न करता! मैं उसकी बात मान गया। मेरे 'हां' कहते ही उसने मुझे कसकर एक झापड़ मारा।...
...और मैं बेहोश हो गया।
जब मुझे होश आया तो मेज पर एक चिट्ठी और वही 'रोमन-टोप' और पोशाक रखी थी।
यह रही वह चिट्ठी!
इस चिट्ठी के साथ रखी टोपी
पोशाक को पहनकर तुम परसों
सतपुरा के बीहड़ों में जाओगे। यहीं
तुमको एक केबिन में डिसूज़ा नाम
आदमी मिलेगा। तुमको उसका खून
करना है। डिसूज़ा की फोटो और रास्ते
का नक्शा इस चिट्ठी के साथ लगा है
डरना मत! इस 'टोप' को पहनने से तुम
में अद्भुत ताकत आ जाएगी। कत्ल करने
पोशाक और टोप वहीं छोड़
। वैसा तुम्हारे पास
धोखा
ओह! समझा! लेकिन फिर डिसूज़ा का क्या हुआ?
वह पूरा प्लान फेल हो गया?
तुम्हारे बेहोश हो जाने के बाद मैंने डिसूज़ा को बहुत ढूंढा, पर वह मुझको कहीं नहीं मिला!
...तब मैंने सोचा कि क्यों न मैं ही इस जादुई पोशाक को लेकर उड़न छू हो जाऊं!
पर मैं यह नहीं जानता था कि वह शैतान मुझपर नजर रखे हुए था!

जैसे ही मैं अपने फ्लैट में घुसा, मेरे सर पर पीछे से एक जोरदार वार हुआ.
...और जब मुझको होश आया तो न तो वहां कोई पोशाक या टोप था और न ही कोई पैसा!
हुं! शायद तुम सच बोल रहे हो! पर इतना काम तो तुम्हारा 'ब्लू बैग' खुद भी कर सकता था!
सवाल यह है कि उसने तुमको क्यों भेजा?
और उसी वक्त- श्रीवास्तव बाबू के घर में -
हेलो! हां!... खान!? तुम कहां से बोल रहे हो?
मैं 'पर्ल-हार्बर' पर समुद्र में खड़ी एक मोटर बोट से बोल रहा हूं!...हां!
तुम तुरंत 'पर्ल-हार्बर' आ जाओ!
मुझे तुमसे बहुत जरूरी बात करनी है! 'रोमन-टोप' के विषय में!
ही ही! बॉस ये सुन कर कितना खुश होगा!
अभी आता हूं, प्यारे खान!
अभी आता हूं!

एक तरफ ध्रुव अपनी मोटर-साईकल पर पूरे शहर में लापता डिसूजा को ढूंढ रहा था।
और दूसरी तरफ श्रीवास्तव बाबू अपनी कार में 'पर्ल हार्बर' की तरफ बढ़ रहे थे।
पर्ल हार्बर
खान साहब को भी बेसब्री से इंतजार था।
यहां से मुझको दूर दूर तक दिखाई दे रहा है!
आज वह श्रीवास्तव का बच्चा नहीं बचेगा!
तिवारी मर चुका है, डिसूजा पर हमला हो चुका है, मैं रोमन सैनिक नहीं हूं।
अब सिर्फ वह कमीना श्रीवास्तव ही रोमन-सैनिक हो सकता है।
आज मैं इस पाप को दुनिया से हमेशा के लिए खत्म कर दूंगा!
हमेशा के लि.. लि...
तु... तुम आ गए! अब तुम नहीं बचोगे, श्रीवास्तव!
जवाब में 'रोमन-सैनिक' धीरे से हंसा।
हा हा हा!

- और उसने अपना पैर कस कर मोटरबोट पर पटका।
पूरी मोटर-बोट एक तरफ़ झुक गई।
ख़ान साहब संतुलन खोकर डेक पर आ गिरे
पिस्तौल उनके हाथ से छूटकर पानी में जा गिरा।
अब ख़ान साहब बेबस थे।
मु...मुझे माफ़ कर दो, श्रीवास्तव! मैं मैं तो म.. मज़ाक कर...
'रोमन-हत्यारे' ने सब अनसुना करते हुए ख़ान साहब के पैर पकड़कर उनका सिर पानी में डुबा दिया।
थोड़ी देर छटपटाने के बाद ख़ान साहब का बदन ठंडा और शांत हो गया।
हा...हा! यह भी गया!
और मोटर बोट तेज़ी से किनारे की ओर बढ़ने लगी।

लगभग उसी वक्त- श्रीवास्तव बाबू के घर में–
श्रीवास्तव बाबू के पास कोई फ़ोन आया था, साहब!...
...उसी के तुरंत बाद वे 'पर्ल-हार्बर' चले गए!
पर्ल-हार्बर!
ध्रुव एक पल भी नहीं रुका –
धड़. धड़ धड़. धड़. धड़. धड़.
हवा से बातें करती उसकी स्पेशल मोटरसाईकल-
सीधे 'पर्ल-हार्बर' पर ही आकर रुकी –
कार तो श्रीवास्तव बाबू की ही लगती है!
ध्रुव!... ध्रुव!!...
ओह! डिसूज़ा साहब! मैं तो आपको ढूंढ-ढूंढ कर थक गया!
थैंक गॉड, कि तुम जिन्दा हो!
मैं तो समझ रहा था कि 'रोमन सैनिक' ने तुमको... खैर छोड़ो!
मैंने अभी-अभी श्रीवास्तव के घर फोन किया था! पता चला कि वह यहा आया है!
बस! मैं तुरत यहाँ चला आया!
तो आइए! यहा पर सिर्फ एक 'मोटरबोट' ही दिख रही है!
शायद उसी में कुछ हो!...
परंतु मोटर-बोट में घुसते ही दोनो भौंचक्के रह गए।
ओह!
आह! खान साहब!

खान साहब मर चुके हैं !
लेकिन...लेकिन यह देखो ! इधर आओ, ध्रुव !
श्रीवास्तव ! श्रीवास्तव रोमन हत्यारा है !! मैं तो यह सोच भी नहीं सकता था ! मेरा शक तो खान पर था !
उठ, कमीने ! खेल खत्म हो चुका है !
थ
ट
नहीं, डिसूजा ! खेल तो अब शुरू हुआ है !
म...मतलब !
मतलब अब हर चीज़ शीशे की तरह साफ हो चुकी है, डिसूजा साहब उर्फ रोमन-सैनिक !
क...क्या बक रहे हो तुम ?
नाटक करना बेकार है, डिसूजा !
मुझको तुमपर तभी शक हो गया था जब मैंने तुम्हारे कॉटेज मे वापस जाकर वे चली हुई गोलियाँ देखी जो तुमने 'रोमन-सैनिक पर चलाई थीं !...
.. वे गोलियां नकली थीं !...
अपने को शक से बचाने के लिए तुमने रंगाशाह को रोमन हत्यारा बनाया...
...उसके बाद तुम श्रीवास्तव बाबू और खान साहब की घात में रहे ! किसी प्रकार तुमको यह पता चल गया कि खान साहब ने श्रीवास्तव बाबू को यहा बुलाया है !...
..तुम यहा पहले आ धमके ! खान का कत्ल किया। और फिर.
. जब श्रीवास्तव बाबू यहा आए तो तुमने उनको किसी प्रकार बेहोश कर दिया !

अपनी पोशाक उसको पहना दी और बाहर आकर मेरा इंतजार करने लगे!
बस! क्या सबूत है इसका?
यह रोमन टोप!...
मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं कि इस पर हर जगह तुम्हारी उंगलियों के निशान हैं!
जो अगर तुम निर्दोष होते तो इस 'रोमन-टोप' पर ये निशान कभी न होते!
आह!...
इतने चालाक हो तो अब अपनी मौत से बच लो।
डिसूज़ा के ज़ोरदार वार से ध्रुव केबिन के अंदर आ गिरा।
डिसूज़ा ने लपक कर केबिन बाहर से बंद कर दिया।
भागने की कोशिश बेकार है, डिसूज़ा!
यह दरवाज़ा तोड़ने में मुझे सिर्फ दो मिनट लगेंगे!
कड़क
और तब तक मैं तुम्हारे लिए तैयार हो जाऊंगा!
दरवाज़ा टूटा, मगर तब तक देर हो चुकी थी।
?

ओह! अगर इसने मुझे पकड़ लिया तो मेरा बचना असंभव हो जाएगा!
ध्रुव बिना किसी पूर्व चेतावनी के उछला।
और उसने रोमन-सैनिक बने डिसूज़ा को बेरहमों की तरह मारना शुरू कर दिया।
तड़!
आ TTTTT
- और डिसूज़ा बाहर डेक पर आ गिरा।
लेकिन डिसूजा पर इस का कोई असर नहीं पड़ा।
धाड़
उसके एक ही वार में ध्रुव नीचे आ गिरा।
अब मैं तुमको बताऊंगा कि 'रोमन हत्यारे' से उलझने का क्या नतीजा होता है!
आह!
ध्रुव को अपनी गर्दन की हड्डियां चटकती महसूस हुई।
व..वह समुद्री चिड़िया!
?
ध्रुव के घुटते गले से एक हल्की सीटी उबली -
- और अगले ही पल उड़ती चिड़िया विद्युत गति से नीचे उतरी और-
आह!

ध्रुव एक बार फिर आज़ाद था।
ऐसा मौका दोबारा नहीं मिलेगा।
ध्रुव ने डेक पर पड़ी लोहे की मोटी चेन उठाई।
और -
मेरे ख्याल से यह चेन इसको बांधे रखने के लिए पर्याप्त होगी!
लेकिन ध्रुव को तुरंत ही पता चल गया कि उसका ख्याल गलत था।
कड़ाक
इस बार ध्रुव के लिए कोई मौका नहीं था।
डिसूज़ा के हाथ ध्रुव की गर्दन पर कस गए।
ध्रुव के पैर हवा में उठ गए और उसका दम घुटने लगा।
उसपर बेहोशी छाने लगी।
लेकिन बेहोशी की हालत में भी ध्रुव के हाथ उठे -
और डिसूज़ा के सर पर रखा रोमन टोप ध्रुव के हाथ में आ गया।
?

और पलभर में खेल पलट गया।
म-मेरी ताक़त कहां गई ?
टोप के उतरते ही डिसूज़ा की आश्चर्यजनक शक्ति तेज़ी से गायब होने लगी।
!
धाड़
और ध्रुव के...
तड़ाक
आह!
...दो ही वारों में...
धाड़
...डिसूज़ा फर्श पर बेहोश पड़ा था।
धड़ाक
खेल, वास्तव में अब खत्म हुआ था।

• समाप्त •

मुद्रक: जापान आर्ट प्रैस